ॐ

~~~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-नवम्   विषय- हिन्दी

दिनांक—04/07/2020   **चंद्र गहना से लौटती बेर**

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

मेरे प्यारे बच्चों, शुभ प्रभात!

आपका हर दिन खुशियों से भरा हो!

आज की कक्षा में हम काव्य-खंड में केदारनाथ अग्रवाल की कविता **'चंद्र गहना से लौटती बेर'** कविता की आगे की कड़ी पढ़ेंगे।

चंद्र गहना से लौटती बेर

-- **केदारनाथ अग्रवाल**

और सरसों की ना पूछो—

हो गई सबसे सयानी,

हाथ पीले कर लिए हैं

ब्याह- मंडप में पधारी

फाग गाता मास फागुन

आ गया है आज जैसे।

देखता हूं मैं: स्वयंवर हो रहा है,

प्रकृति का अनुराग-अंचल हिल रहा है,

इस विजन में,

दूर व्यापारिक नगर से

प्रेम की प्रिय भूमि उपजाऊ अधिक है।

और पैरों के तले है एक पोखर,

उठ रही इसमें लहरियाँ,

नील तल में जो उगी है घास भूरी

ले रही वह भी लहरियाँ।

क्रमशः

धन्यवाद

कुमारी पिंकी “कुसुम”